रुस्तम की कविताएँ

पूरी पृथ्वी में

पूरी पृथ्वी में
पूरा आकाश भी था।
पूरे आकाश में
सिर्फ एक चाँद था।
पर चाँद
कटा हुआ,
अधूरा था
और उसकी रोशनी
आधे चाँद जैसी फैली थी।

नीम के पत्ते

नीम के पत्ते मेरे ऊपर बरस रहे थे।
हवा चल रही थी।
रात में
चाँद निकलने वाला था।
मैं नीम के नीचे बैठा था।
हरे और पीले
नीम के पत्ते मेरे ऊपर बरस रहे थे।

बरस रहा था चाँद भी

बरस रहा था चाँद भी।
चाँद बादल था।
उसकी किरणें बारिश की बूँदें।
बरस रहा था चाँद भी।
उसकी बूँदों में
नहाया हुआ
मैं खड़ा था।